एक मरीज़ का डॉक्टर के आगे बयान

हमें मालूम है अपनी बीमारी का कारण
एक छोटा सा शब्द है
जिसे सब जानते हैं
पर कहता कोई नहीं
जब बीमार पड़ते हैं
तो बताया जाता है
सिर्फ़ तुम्हीं (डॉक्टर) हमें बचा सकते हो
जनता के पैसे से बने
बड़े-बड़े मेडिकल कॉलेज में
खूब सारा पैसा खर्च कर
दस साल तक
डॉक्टरी शिक्षा पायी है तुमने
तब तो तुम हमें, अवश्य अच्छा कर सकोगे।
क्या तुम सचमुच हमें स्वस्थ कर सकते हो ?
तुम्हारे पास आते हैं जब
बदन पर बचे चीथड़े खींचकर
कान लगाकर सुनते हो तुम
हमारे नंगे जिस्मों की आवाज़
खोजते हो कारण और शरीर के भीतर
पर अगर
एक नज़र शरीर के चिथड़ों पर डालो
तो वे शायद तुम्हें ज़्यादा बता सकेंगे
क्यों घिस-पिट जाते हैं
हमारे शरीर और कपड़े बस
एक ही कारण है दोनों का
वह एक छोटा सा शब्द है
जिसे सब जानते हैं
पर कहता कोई नहीं।
तुम कहते हो कन्धों का दर्द टीसता है
नमी और सीलन की वजह से
डॉक्टर
तुम्हीं बताओ यह सीलन कहां से आयी ?
बहुत ज़्यादा काम और बहुत कम भोजन ने
कमज़ोर और दुबला कर दिया है हमें
पर्ची पर लिखते हो और वजन बढ़ाओ
यह तो वैसा ही है
दलदली घास से कहो
की वो खुश रहे।
डॉक्टर
तुम्हारे पास कितना वक्त है
हम जैसों के लिये ?
क्या हमें मालूम नहीं
तुम्हारे घर के एक कालीन की कीमत
पांच हज़ार मरीज़ों से मिली फ़ीस के बराबर है
बेशक तुम कहोगे
इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं।
हमारे घर की दीवार पर
छाई सीलन भी
यही कहानी दोहराती है
हमें मालूम है अपनी बीमारी का कारण
वह एक छोटा सा शब्द है
जिसे जानते सब हैं
पर कहता कोई नहीं
वह है 'गरीबी'।

बर्तोल्त ब्रेख्त

एनआईटी पांच नम्बर में

पुलिस मेहरबान तो धंधेबाज पहलवान

फ़रीदाबाद (म.मो.) थाना एनआईटी प्रभारी के निकम्मेपन के चलते थाना एनआईटी क्षेत्र इन दिनों धंधेबाजों के जाल में फ़स चुका है। ये धंधेबाज दिन-दहाड़े अपने धंधे कर पुलिस कमिशनर के मुंह पर कालिख पोत रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ़ कमिशनर डंडा सड़कों पर घुमा शहर वासियों को भय मुक्त सुरक्षित माहौल देने का वादा कर रहे हैं। वहीं धंधेबाज़ अपने गोरखधंधे दिन दिहाड़े बिना किसी भय के खुल कर कर रहे हैं।

वहीं एनएच 5 नम्बर सी ब्लॉक में सट्टे की पर्चियां व कैसिनो चकरी (राजु) धड़ल्ले से चला रहा है। वहांक्सर एनआईटी पुलिस को भी बड़ी आसानी से अपना हिस्सा लेते देखा जा सकता है। एनएच 5 के हर गली मोहल्ले में शराब तस्करी का धंधा जोरों से चल रहा है। वही सूत्रों अनुसार एसीपी एनआईटी जमकर इन कैसिनो से 20 से 25 हजार रुपये मासिक शुल्क लेकर इन धंधेबाजों को छूट दे रहे हैं।

एनएच 5 शिव मंदिर रोड पर स्थित दुकानदारों ने त्यौहारों से 1 महीना पहले ही अतिक्रमण कर सड़कें व फुटपाथ कब्जा रखे हैं। वहीं इन कब्ज़ा करनेवाले दुकानदारों के पास थाना एनआईटी पुलिस को बैठे आसानी से देखा जा सकता है। जिसके चलते कब्जा करने वाले दुकानदारों के हौसले बुलंद है। मार्किट में आए खरीददार अगर अपनी गाड़ी किसी दुकान के सामने खड़ा कर दे तो समझो उसकी शामत आ गई। ये दुकानदार उन खरीदारों को गाली-गलौच व मार-पीट करने तक उतारू हो जाते हैं।

आजकल धर्मपाल गोला गिरोह एनएच 5 के सी ब्लॉक में मैच व दाने की बुक लगा कर चर्चा का विषय बने हुए हैं। सूत्रों अनुसार एनएच 5 सी ब्लॉक में जिसके घर में दाने की बुक लगाई जाती है वह एनएच 5 का एक शराब माफ़िया है। जिसको एनआईटी थाना में काफ़ी पैंठ बनाई गई है जिस को लेकर ये अपने घर जुआ व मैच दाने की बुक लगाने के 2000 रुपये घंटे के हिसाब से लेता है। यहां बुक लगाने के लिये पलवल के जुआरी तक आते हैं। यही शराब तस्कर थाना एनआईटी प्रभारी को भी इन जुआरियों व सट्टेबाज़ों से रुपया इकट्ठा कर पहुंचता हैं।

एनएच 5 का सी ब्लॉक ही अकेला ब्लॉक नहीं है। जिससे ये गोरखधंधा होता है। बल्कि एनएच 5 का हर दूसरा ब्लॉक इन सट्टेबाज़ों व माफियों के कब्जे में है। वहीं जिस इलाके का एसएचओ ही बिकाऊ हो वहां ऐसा होना स्वाभाविक है।

मेहनतकशों की लूट

थरमा डाइंग प्रा.लि. 14/5 मथुरा रोड़ मेवला महाराजपुर मेट्रो स्टेशन के पास स्थित है। ये एअर फिल्टर बनाती है जो हास्पीटल, मेडिकल कम्पनी और घरों के एअर कन्डीशन में लगाया जाता है जो हवा को शुद्ध हवा में बदलने का काम करता है। कम्पनी मालिक-गुरूप्रीत सिंह है व डायरेक्टर रश्मी नागा भूषण हैं जो 70 साल की महिला हैं।

इस कम्पनी में लगभग 150 मज़दूर कार्यरत हैं जिसमें 10 मज़दूर कम्पनी रोल पर परमानेन्ट हैं। जो कोई 30-35 साल से काम कर रहे हैं। बाकी 140 मज़दूर ठेकेदारी के अंदर काम कर रहे हैं जिसमें आधे से ज़्यादा महिला मज़दूर हैं। प्रोडक्शन जहां होता है उस डिपार्टमेंट को चार नामों से जानते हैं। हेप्पा, माइक्रोवी, चैनल व फेब्रीकेशन डिपार्टमेन्ट हेप्पा डिपार्ट में फ़िल्टर बनता है जो महंगा होता है। माइक्रोबी में भी फ़िल्टर बनता है। चैनल डिपार्ट में इन फ़िल्टर को चारों तरफ़ से बांधते यानी सहारे के लिए एल्युमिनियम पत्ती (चैनल) की कटिंग व फ़िटिंग होकर माइक्रोवी डिपार्ट में जाता है तब फिल्टर बनता है। इन तीनों डिपार्टों में महिला मज़दूर काम करती है। फेब्रीकेशन डिपार्ट में लोहे की सीट की कटिंग कर एअर सावर पैनल पास बॉक्स आदि तैयार किया जाता है। इनमें 5 मज़दूर हैं जो काफ़ी सालों से काम कर रहे हैं। बहुत मेहनत का काम है। बकल्डिंग, कटिंग, फिटिंग आदि करना होता है। काम का दबाव बनाने के लिये चारों डिपार्ट में कैमरे लगवा रखे हैं। बाथरूम व कैंटीन परिसर में कैमरे लगे हैं जिसके द्वारा देखकर मज़दूरों को डांटने डपटने का काम मैनेजमेंट कर रही है। काम का दबाव बनाने के लिये ये कैमरे लगाये गये हैं ताकि कोई मज़दूर पानी कितना पीता है। बाथरूम कितना करता है, पर नज़र रखी जा सके। इस सारी गतिविधियों के द्वारा प्रबंधन की मज़दूर को इंसान से मशीन बनाने की सोच दिखती है। चैनल डिपार्ट में एक लड़की को चोट लगने पर इलाज नहीं करवाया गया उल्टे उनको नौकरी से निकाल दिया गया। ठेके पर मज़दूरों का बुरा हाल है। न ही न्यूनतम ग्रेड मिलता है। महीने में कोई छुट्टी नहीं मिलती है। साप्ताहिक अवकाश के अलावा। हैप्पा, माइक्रोवी, चैनल और फेवीक्रेशन में ठेके के मज़दूर से काम कराना व मशीनों से लेकर हाथों से काम करने की प्रक्रिया को तेज करने के लिये लगातार दबाव बनाया जाता है। ठेके के मज़दूरों को आवश्यक काम व घर जाने के लिये छुट्टियां नहीं मिलती हैं। अगर मज़दूर घर जाता है तो कहा जाता है कि आओगे तो देखेंगे कम्पनी में काम ज़्यादा रहेगा तो रख लेंगे। कई मज़दूर 10 साल से काम कर रहे हैं। महिला मज़दूरों से भी 5-7 सालों से काम कर रही महिलायें हैं। ये कम्पनी सारे श्रम कानूनों को ताक पर रखकर नियमित काम कराने के लिये ठेके के मज़दूरों से काम करा रही हैं। इन मज़दूरों को न ही बोनस, न ही तनख्वाहों में कोई बढ़ोत्तरी, न ही कोई छुट्टी मिलती है। पे स्लिप, फण्ड स्लिप व ईएसआई कार्ड नहीं मिलता है। रोज प्रोडक्शन बढ़ाने के लिये दबाव डाला जाता है। प्रोडक्शन मैनेजर सरदार जगजीत जो चारों डिपार्टों का काम देखता है। लगातार महिला मज़दूरों से बदतमीजी से पेश आता है। अगर कोई मज़दूर बीमार हो गया या उसने छुट्टी कर ली तो अगले दिन कम्पनी गेट पर बैठा दिया जाता है। अगर मज़दूर अपनी बात सही साबित करने के लिये आगे आता है तो उसे निकाल दिया जाता है।

वहीं जो 10 मज़दूर स्थायी हैं इन्होंने अपनी पूरी जिंदगी कम्पनी के मुनाफ़े बढ़ाने के लिये जी जान लगा दी पर उनकी तनख्वाह वही 8100, 8600, 9600 रुपये है। ये 30-35 सालों से काम कर रहे हैं। ये 50 से 58 साल तक के मज़दूर हैं। इनको छुट्टियां लेने के लिये तरह-तरह की बातें मैनेजमेंट की सुननी पड़ती है। शार्ट लीव के लिए भी परेशान किया जाता है। प्रोडक्शन बढ़ाने के लिये सरदार जगजीत सिंह हर समय दबाव बनाता है। बात-बात में इनको धमकी देता है। करना है तो करो नहीं तो हिसाब लो-घर जाओ।

इस कम्पनी में सुरक्षा की कोई गारण्टी नहीं है। फेब्रीकेशन, नंगे तार बिजली के लटकना, आग बुझाने वाला कोई सिलेण्डर नहीं रखा गया है। पीने लायक साफ़ पानी तक नहीं है। बाथरूम गंदा रहता है। 150 मज़दूरों पर लगभग 10 टॉयलेट होने चाहिए। लंच रूम जहां ठेकेदारी के मज़दूर लंच करते हैं वहां पंखा तक नहीं है।

इस तरह सारे श्रम कानून को ताक पर रखकर मज़दूरों का बेतहाशा शोषण कर मुनाफ़ा बटोरा जा रहा है। इसका 1 महीने का करोड़ों का टर्नओवर है। आज इसकी फैक्टरी चंडीगढ़, मोहाली, फ़रीदाबाद, नरैला (दिल्ली) आदि जगहों पर है। इस तरह आज मज़दूरों का खून निचोड़ कर कम्पनी मालिक इससे मालामाल हो रहे हैं। मुनाफ़े को और बढ़ाने के लिये मज़दूरों के अधिकारों को छीना जा रहा है। आज मोदी सरकार पूंजीपतियों की सेवा में श्रम कानूनों को बदलकर मज़दूर को गुलाम बनाने में तुली है।

आज जरूरत है ठेकेदारी के मज़दूर व परमानेन्ट मज़दूर मिलकर इन सरकार व पूंजीपतियों के खिलाफ़ खड़े हों। अपने हक़ अधिकार के लिये लड़ें। एकता बनायें तभी जाकर मज़दूर की जिंदगी में कोई सुधार आयेगा।

-एक मज़दूर फ़रीदाबाद

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,**
2. **प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,**
4. **रैंक, 45 नीलम चौक,**
5. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,**
6. **राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,**
7. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।**
8. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**
9. **स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब**